International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor- 5.414, Volume 4, Issue 9, September 2017
Website- www.aarf.asia, **Email** : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

ओशो के शैक्षिक और दार्शनिक विचारों का अनुशीलन एवं उनकी प्रासंगिकता''

सुनील कुमार तोमर
शोध छात्र
शिक्षा विभाग
चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

''कुछ लोग होते है चिन्तनकला या विज्ञान के क्षेत्र में जो प्रतिभाशाली होते है, और कभी–कभी यह दुनियां उन्हें सम्मानित करती है लेकिन ओशो अकेले है बिल्कुल अकेले जिनके होने से यह दुनियां सम्मानित हुई यह देश सम्मानित हुआ।''

–अमृता प्रितम

बुद्ध पुरूषों की अमृतधारा में ओशो एक नया प्रारंभ है। वे अतीत की किसी भी धार्मिक परंपरा या श्रृंखला की कड़ी नहीं है ओशो एक नये युग का शुभारम्भ है और उनके साथ ही समय दो सुस्पष्ट खण्डों में विभाजित होता है ओशो पूर्व तथा ओशो पश्चात्।

ओशो के आगमन से एक नये मनुष्य का एक नये जगत का एक नये युग का सूत्रपात हुआ है जिसकी आधारशिला अतीत के किसी धर्म में नहीं किसी दार्शनिक विचार पद्धति में नहीं है। ओशो स्वःस्नात धार्मिकता के प्रथम पुरूष है सर्वथा अनूठे सबुद्ध रहस्यदर्शी है।

ओशो ने अपने प्रवचनों के माध्यम से मानव चेतना के विकास के हर पहलू पर प्रकाश डाला। बुद्ध, महावीर, कृष्ण, शिव, शांडिल्य, नारद, जीसस के साथ ही साथ भारतीय आध्यात्म के अनेक विद्वानों आदिशंकराचार्य, गोरख, कबीर, नानक, मलूकदास, रविदास, मीरा आदि पर उनके हजारों प्रवचन से अस्पर्शित

© **Associated Asia Research Foundation (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

रहा हो। योग तंत्र, हदीस, सूफी जैसी विभिन्न साधना परम्पराओं के गूढ़ रहस्यों पर उन्होंने सविस्तार प्रकाश डाला है। साथ ही राजनीति, कला, विज्ञान, मनोविज्ञान, दर्शन, शिक्षा, परिवार, समाज, गरीबी, जनसंख्या विस्फोट पर्यावरण तथा संभावित परमाणु युद्ध के व उससे भी बढ़कर एड्स महामारी के विश्व संकट जैसे अनेक विषयों पर भी उनकी क्रांतिकारी विचार उपलब्ध है।

''मेरा संदेश कोई सिद्धान्त कोई चिंतन नहीं है, मेरा संदेश तो रूपान्तरण की एक कमियां एक विज्ञान है।''

ओशो का जन्म मध्य प्रदेश के कुचवाड़ा गांव में 11 दिसम्बर 1931 में हुआ। 21 मार्च 1953 को उनके जीवन में परम संबोधि का विस्फोट हुआ। वे बुद्धत्व को उपलब्ध हुए और 19 जनवरी 1990 को ओशो इंटरनेशनल में देह त्याग हुआ।

ध्यान और सृजन का यह अनूठा नव–सन्यास उपवन, ओशो कम्यून ओशो की विदेह उपस्थिति में भी आज पूरी दुनिया के लिए एक ऐसा प्रबल आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है कि जहां निरन्तर नए–नए लोग आत्म रूपांतरण के लिए आ रहे है।

ओशो के अनुसार उनका नाम विलयम जेन्स के शब्द ओशनिक से लिया गया है। जिसका अभिप्राय है सागर में विलीन हो जाना, ओशनिक से अनुभूति की व्याख्या तो होती है लेकिन वे कहते है कि अनुभोक्ता के सम्बन्ध में क्या? उसके लिए हम ओशो शब्द का प्रयोग करते हैं। बाद में उन्हें पता चला कि ऐतिहासिक रूप में सुदूर पूर्व में भी ओशो शब्द प्रयुक्त होता रहा है जिसका अभिप्राय है भगवत्ता को उपलब्ध व्यक्ति जिस पर आकाश फूलों की वर्षा करता है।

''भारत में अब तक जितने विचारक पैदा हुए है वे उनमें सबसे मौलिक सबसे उर्वर सबसे स्पष्ट और सर्वाधिक सृजनशील विचारक थे। उनके जैसा कोई व्यक्ति हम सदियों तक न देख पाएंगे। ओशो के जाने से भारत ने अपने महानतम सपूतों में से एक खो दिया है। विश्व भर में जो भी खुले दिमाग वाले लोग है वे भारत की वैचारिक समृद्धि के भागीदार हुए है। उनमें सबसे प्रथम ओशो का नाम है।''

–खुशवन्त सिंह

ओशो के शैक्षिक एवं दार्शनिक विचार–

शिक्षा की स्थिति देखकर हृदय में बहुत पीड़ा होती है, शिक्षा के नाम पर जिन परतंत्रताओं का पोषण किया जाता है उनसे एक स्वतन्त्र और स्वस्थ मनुष्य का जन्म सम्भव नहीं है। मनुष्य जाति जिस कुरूपता और अपंगता में फंसी है, उसके मूलभूत कारण शिक्षा में ही छिपे है। शिक्षा ने प्रकृति से तो मनुष्य को तोड़ दिया है, लेकिन संस्कृति उससे पैदा नहीं हो सकी हैं विकृति, इस विकृति को ही संस्कृति समझा जाता है।

मैं भी शिक्षा के वस्त्रों को उघाड़कर ही देखना चाहूँगा इसमें आप बुरा तो न मानेंगे विवशता है इसलिए ऐसा करना आवश्यक है। शिक्षा की वास्तविक आत्मा को देखने के लिए उससे तथा कथित वस्त्रों को हटाना ही होगा क्योंकि अत्याधिक सुंदर वस्त्रों में जरूर ही कोई अस्वरूप और कुरूप आत्मा वास कर रही है।

जीवन के वृक्ष पर कड्वे और विषाक्त फल देखकर क्या गलत बीजों के बोये जाने का स्मरण नहीं आता, बीज गलत नहीं तो वृक्ष पर गलत फल कैसे आ सकते हैं। वृक्ष का विषाक्त फलों से भरा होना बीज में पच्छन विष के अतिरिक्त और किस बात की खबर है? मनुष्य गलत है, तो निश्चय ही शिक्षा सम्यक नहीं है।

ओशो ने कहा है कि शिक्षाशास्त्रों से भी मेरी दृष्टि भिन्न और विरोधी हो सकती है। मैं न तो शिक्षाशास्त्री ही हूँ और न समाजशास्त्री और तब जीवन और उसकी समस्याओं के प्रति निष्पक्ष और निर्दोष दृष्टि से नहीं रह सकता हूँ। शास्त्र जिसके लिए महत्वपूर्ण है, उसके समक्ष समाधान समस्याओं से भी ज्यादा महत्वपूर्ण हो जाते हैं। वह समस्याओं के अनुरूप समाधान नहीं वरन् समाधानों के अनुरूप ही समस्याओं को देखने लगता है। इससे जो मूढ़तापूर्ण स्थिति पैदा होती है उससे समाधानों से समस्याओं का अंत नहीं होता अपितु समस्या और बढ़ती जाती है अगर समग्र रूप से देखें तो मनुष्य का पूरा इतिहास ही इसका प्रमाण है।

धर्म और विज्ञान–

ओशो धर्म आलोचक भी थे और उन्होंने ऐसे सभी धर्मों का विरोध किया जो मनुष्य को अपना गुलाम बनाते है उनका मानना था कि इस विज्ञान के युग में मनुष्य अपने अस्तित्व को भूलता जा रहा है। ओशो

कहते है कि मैं धर्म या विज्ञान का विरोधी नहीं हूँ यहाँ तो धर्म और विज्ञान एक दूसरे के विरोध में खड़े है। यह विरोध धर्म और विज्ञान का नहीं वरन् मनुष्य के चित में एक अति के विरोध में पैदा हुआ दूसरी अति का विरोध था।

विज्ञान ब्रह्म की खोज है– धर्म आंतरिक की खोज हे। केन्द्र की, विज्ञान पदार्थ में प्रवेश है। धर्म परमात्मा में, ब्रह्म रूप से वे एक आन्तरिक विरोध में दिखाई पड़ते है, किन्तु वस्तुतः वे किसी एक ही सत्य के पहलू है। उनको विरोधाभास रूप में मनुष्य के शब्दों ने ही मनुष्य की खण्डित दृष्टि ने खण्डित कर डाला है जबकि जीवन तो एक है और अखण्ड है।

धर्म का जीवन में अवतरण उसी क्षण से होता है जब व्यक्ति अपनी दौड़ के मूल कारण को देखना और पहचानना शुरू करता है। यह सत्य दिखाई पड़ जाना कि महत्वकांक्षा का मूल आंतरिक अभाव से पलायन है, जीवन में एक नई शिक्षा का उद्घाटन बन जाता है। धर्म आनंद है क्योंकि धर्म स्वंय के प्रति जागृत है। जो स्वयं के प्रति जागरूकता पैदा करता है। वह पाता है कि वहां अभाव नहीं है और यह साक्षात आनन्द से भर देता है क्योंकि फिर कुछ पाने को नहीं रह जाता है। वह सब जो भी पाने जैसा है, पाया जाता है, कि पापा ही हुआ है।

वह आंतरिक है और बाह् य बिन्दु से देखने पर बाह्य और श्रास के स्वरूप में ही देखने पर वह दोनों है और दोनों सही है। ऐसा ही जीवन भी है। वह एक बिन्दु से बाह्य है एक बिन्दु से आंतरिक और स्वरूप से दोनों है और दोनों नहीं है।

बाह्य बिन्दु विज्ञान है, अंतर बिन्दु धर्म–

धर्म के अंदर की दिशा शायद वह दिशा नहीं अदिशा है क्योंकि दिशायें तो सब बाहर की ओर ही होती है। धर्म है अंदर की ओर गति लेकिन नहीं शायद वह गति नहीं अगति है क्योंकि गतियाँ तो सब स्वयं से दूर ही ले जाती है धर्म है केन्द्र की ओर दृष्टि लेकिन नहीं दृष्टा और दृष्टि और दृश्य का भेद तो है परिधि पर केन्द्र पर तो ऐसा कोई भेद नहीं है।

विज्ञान तो परिभाषा है लेकिन फिर धर्म क्या है–

धर्म तो परिभाषा नहीं है जो बाह्य है उसकी ही परिभाषा है। लेकिन फिर धर्म क्या है? धर्म परिभाष्य नहीं है जो बाह्य है उसकी ही परिभाषा हो सकती है जो आंतरिक है उसकी परिभाषा नहीं हो सकती है। वस्तुतः जहां से परिभाषा शुरू होती है वहीं से विज्ञान शुरू हो जाता है क्योंकि वही से बाह्य शुरू हो जाता है विज्ञान के शब्द में, धर्म है शून्य में।

विज्ञान का तो धर्म से विरोध हो भी सकता है, लेकिन धर्म का विज्ञान से विरोध असंभव है। बाह्य आंतरिक से विरोध हो सकता है लेकिन आंतरिक के लिए तो बाह्य है ही नहीं। पुत्र का मां से विरोध हो सकता है लेकिन मां के लिए तो पुत्र का होना उसका स्वयं का होना ही है। धर्म नहीं है धर्म संसार के विरोध में भी नहीं है संसार धर्म के विरोध में हो सकता है लेकिन धर्म संसार के विरोध में नहीं हो सकता है।

विज्ञान के लिए मनुष्य ने कितना श्रम किया है? अथवा खोज से विज्ञान खड़ा हुआ है। लेकिन अग्नि जहां भी है उसकी लपेट जरूर उसी भाग में विशाल हो गयी है जिस मात्रा में विज्ञान ने मनुष्य के हाथों में शक्ति दे दी है, यह शक्ति उस अग्नि का ईधन बन गई है।

धर्म से प्रतिष्ठित मानवीय चेतना के लिए विज्ञान की अग्नि भी आत्मविनाशी नर्क नहीं वरन् आत्मसृजन स्वर्ग बन सकती है। धर्म से संयुक्त होकर विज्ञान एक बिल्कुल ही अभिनव मनुष्यता का जन्म बन सकता है।

मूल्यों में क्रान्ति–

निश्चय ही जीवन मूल्य गलत है अन्यथा मनुष्य के जीवन में यह अशान्ति यह अर्थहीनता यह विभ्रान्ति क्यों होती? क्रूरता, यह हिंसा, यह ईर्ष्या यह अधर्म, यह सब क्या अकारण है? जीवन नहीं : मूल्य गलत है और उसका ही यह सहज परिणाम है।

ध्यान की कला–

ध्यान की कला को ओशो ने विभिन्न शीर्षकों के माध्यम से बताने की चेष्टा की है, उन्होंने कहा है कि शरीर एक मन्दिर है, मन्दिर के द्वार खुले है।

ओशो के कथनानुसार धर्म से हृदय के द्वार खुल जाते है जहाँ से अमृत वर्षा हो सकती है। काम, क्रोध या कोई भी वेग हो ध्यानपूर्वक उसे दूसरे से नहीं जोड़ना चाहिए ब्रह्मचर्य की व्याख्या करते हुए ओशो ने बताया है कि कृपणता ब्रह्मचर्य नहीं है। वीर्य को जबरन रोक लेना भी ब्रह्मचर्य नहीं है। ब्रह्मचर्य तो एक ऐसे आनन्द की घटना है जब आपकी स्थिति के साथ आपका सम्भोग शुरू हो गया हो। नितांत व्यक्तिगत चिन्ता ओशो का चिन्तन किसी व्यक्ति से प्रभावित नहीं रहा, उनकी व्याख्या एवं विवेचना उनकी अपनी मौलिकता है।

ध्यान और प्रेम–

ओशो ने ध्यान और प्रेम की विभिन्न पहलुओं से विवेचित किया है उनका कहना है कि ध्यान और प्रेम एक ही अनुभव के दो नाम है। जब किसी दूसरे व्यक्ति के सम्पर्क में ध्यान घटता है तो उसे हम प्रेम कहते है और जब बिना किसी दूसरे व्यक्ति के अकेले ही प्रेम घट जाता है तो उसे हम ध्यान कहते है। ध्यान और प्रेम एक ही सिक्के के दो पहलु है। ध्यान और प्रेम एक ही दरवाजे का नाम है, जो दो अलग–अलग स्थानों से देखा गया है। अगर बाहर से देखोंगे तो दरवाजा ध्यान है, जैसे एक ही दरवाजे पर बाहर से लिखा होता है एन्ट्रेंस (प्रवेश) और भीतर से लिखा जाता है एग्जिट (बर्हिगमन)। वह दरवाजा दोनों काम करता है। अगर बाहर से उस दरवाजे पर आप पहुँचे तो लिखा है प्रेम और भीतर से उस दरवाजे को अनुभव करें तो लिखा है ध्यान। ध्यान, अकेले ही प्रेम से भर जाने का नाम है और प्रेम के साथ ध्यान में उतर जाने की कला है।

जहाँ ध्यान और प्रेम का मिलन होता है,

उस संगम का नाम सन्यास है।

सन्यास घटे तो प्रेम और ध्यान घट जाएगा,

प्रेम और ध्यान घटे तो सन्यास घट जाएगा।

–ओशो

शिक्षा में क्रान्ति–

ओशो कहते है कि जीवन मिलता नहीं है, निर्मित करना होता है। जन्म मिलता है, जीवन निर्मित करना होता है। इसलिए मनुष्य को शिक्षा की जरूरत है शिक्षा का एक ही अर्थ है कि हम जीवन की कला सीखें। सुख आज है और अभी हो सकता है लेकिन सिर्फ उस व्यक्ति के लिए हो सकता है, जो भविष्य की आशा में नहीं, वर्तमान की कला में जीने का महत्व समझ लेता है तो मैं शिक्षित उसको कहता हूँ जो आज जीने में समर्थ है अभी और यही। लेकिन इस अर्थ में शिक्षित आदमी बहुत कम रह जायेंगे असल में हम पण्डित आदमी को शिक्षित कहने की भूल कर लेते है जो पढ़ लिख लेता है उसे हम शिक्षित कह देते है, पढ़ने लिखने से शिक्षा का कोई सम्बन्ध नहीं है जरूर नहीं कोई भूल हो रही है और पहली भूल यह हो रही है कि हम भविष्य की आशाओं को सिखा रहे हैं। वर्तमान के सत्य को नहीं। भूल यह हो रही है कि हम महत्वकांक्षा में जीने की प्रेरणा दे रहे है हम जीवन की वीणा को बजाना नहीं सीखा पा रहे है। इस भूल के बहुत से हिस्से हैं।

शिक्षा और धर्म–

धर्म के नाम पर जो हिन्दू है, मुसलमान है, बौद्ध है या ईसाई है वह धार्मिक है ही नहीं, क्योंकि धर्म तो एक ही है या जो एक ही है वही धर्म है। धार्मिक चित्त के लिए मनुष्य निर्मित सीमायें सत्य नहीं है। सत्य के अनुभव में संप्रदाय कहां, शास्त्र कहां और कहां संगठन? उस असीम में सीमा कहां है? उस निशब्द में सिद्धान्त कहां है? उस शून्य में मन्दिर कहां और फिर जो शेष रह जाता है वही तो परमात्मा है और उससे पहले की मैं शिक्षा और धर्म पर आपसे कुछ कहूं यह कह देना अत्यन्त आवश्यक है कि धर्म से मेरा अर्थ, अर्थों से नहीं है। ओशो कहते है कि 6धार्मिक होना हिन्दू और मुसलमान होने से बहुत अलग बात है। साम्प्रदायिक होना धार्मिक होना तो है ही नहीं उल्टे वहीं धार्मिक होने में सबसे बड़ी बाधा है। जब तक कोई हिन्दू है या मुसलमान है तब तक उसका धार्मिक होना असम्भव है और जितने लोग धर्म और शिक्षा के लिए विचार करते है और जो शिक्षा को धर्म से जोड़ना चाहते हैं, धर्म से उनका अर्थ या तो हिन्दू होता है या मुसलमान होता है या ईसाई होता है। ऐसी धार्मिक शिक्षा धर्म को तो नहीं लायेगी। धर्म के नाम पर ऐसी

शिक्षा आगे भी दिये चले जाना अत्यन्त खतरनाक है ये शिक्षा ना धार्मिक है न कभी धार्मिक रही है और ना आगे ही हो सकती है क्योंकि यह बाते जिन लोगों को सिखाई गयी है वे लोग कोई अच्छे मनुष्य सिद्ध नहीं हुये है और इन बातों के नाम पर जो संघर्ष खड़े हुए उन्होंने मनुष्य के पूरे चित्त को रक्तपात और हिंसा, क्रोध और घृणा से भर दिया है इसलिए सबसे पहली बात तो मैं यह कहना चाहता हूँ कि धर्म की शिक्षा से मेरा प्रयोजन किसी सम्प्रदायों उसकी धारणाओं या उसके सिद्धान्तों की शिक्षा से नहीं है। यदि हम चाहते है कि शिक्षा और धर्म सम्बन्धित हो तो हमें चाहना होगा कि हिन्दू मुसलमान और ईसाई शब्दों से धर्म का सम्बन्ध दूर हो जाये। तो ही शिक्षा और धर्म सम्बन्धित हो सकते है लेकिन धर्म के नाम पर सम्प्रदाय का सम्बन्ध तो कभी भी नहीं होना चाहिए उससे तो अधार्मिक होना ही बेहतर है क्योंकि अधार्मिक के धार्मिक होने की सम्भावना तो सदा ही जीवंत होती है। जबकि कथित धार्मिक व्यक्ति के चित्त के द्वार तो सदा के लिए ही बंद हो जाते है और जिसके चित्त के द्वार बंद है वह धार्मिक कभी हो ही नहीं सकता। सत्य की खोज में चित्त को मुक्त और खुला हुआ होना अत्यंत अनिवार्य है।

शिक्षा और जागरण–

मनुष्य निरन्तर ही सोचता रहा है कि कैसे अमूल्य जीवन परिवर्तित हो। सोचने के कारण भी है जैसा जीवन है उसमें सदैव दुःख, पीड़ा, अशान्ति संघर्ष और कलह के सिवाय कुछ भी नहीं है जीवन के इस दुःखद रूप ने ही जीवन को रूपान्तरित करने की प्रेरणा भी पैदा की है। शायद ही ऐसा कोई क्षण हो जब मनुष्य को आनन्द उपलब्ध हो पाता है, मनुष्य को आनन्द की आशा लगी रहती है कि कल मिलेगा और आज उसी आशा में हम दुख में व्यतीत करते है और कल जब आता है तो उतना ही दुखी सिद्ध होता है जितना आज है। आशा फिर आगे सरक जाती है ऐसे जीवन भर आदमी उस सुख की आशा में जीता है और पाता निरन्तर दुख है। इस आशा के कारण दुख को झेल भी लेता है लेकिन आनन्द इस तथाकथित जीवन में दिखाई नहीं पड़ता है या तो यह हो सकता है कि जीवन में आनन्द है ही नहीं या आनन्द की खोज ही गलत है या यह हो सकता है कि जैसा जीवन है इस जीवन में आनन्द नहीं है। इसलिए जीवन को परिवर्तित करने की खोज सार्थक है।

ओशो एक शिक्षा शास्त्री के रूप में–

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि भारत वर्ष सम्पूर्ण विश्व में महानता की एक मिशाल रहा है। भारत का अपनी विभिन्न प्रतिभाओं एवं संस्कृति की अपनी विशेषता एवं गौरव पूर्ण इतिहास के आधार पर आज भी विश्व में अपना अलग मुकाम है। यह बात सत्य है कि गुरू के बिना किसी प्रकार प्रगति नहीं हो सकती गुरु केवल पुस्तकीय ज्ञान नहीं है। वरन् वह संसार के अन्य मूल्य सिद्वान्तों आदि के संस्कार भी बालक में डालता है, क्योंकि बालक आने वाले कल का आधार होता है। यदि बालक का सही मार्ग दर्शन किया जाता तो वह प्रत्येक दिशा में हितकारी होगा, और यदि नहीं हो सका तो वह कल अनेक तरह से देश, समाज, धर्म आदि के लिए अहितकारी होगा। ओशो के अनुसार शिक्षा का कार्य क्षेत्र इतना विस्तृत है कि इसमें समस्त ब्रह्ममांड के ज्ञान आते है और यह सभी ज्ञान एक साथ एक व्यक्ति को एक समय में देना संभव नहीं है। इसके लिए एक भविष्य विचार प्रस्तुत किया गया है कि एक महिला एक डाक्टर के पास गयी उसने कहा डाक्टर साहब मेरी आंख में दर्द है कृपया जल्दी कोई ईलाज करो, डाक्टर ने कहा आपकी कौन सी आंख में दर्द है? महिला ने कहा बायीं आंख में, तभी डॉ0 बोले माफ करना बहन जी में बायीं आंख का डाक्टर नहीं, दायीं आंख का डाक्टर हूँ। कृपया बायीं आंख के डाक्टर के पास जाओं।

कहने का तात्पर्य यह है कि शिक्षा का क्षेत्र इतना विस्तृत है कि इसका कितना भी विस्तार करते जाओं ये यह बढ़ता जायेगा। ज्ञान कभी भी अधिक नहीं कहलायेगा। चाहे कितना भी बढ़ाओं लेकिन कम ही लगेगा। ओशो ने अपने आदर्शवादी दृष्टिकोण को देश काल की सीमा का उल्लंघन करते हुए सम्पूर्ण संसार को अपने ज्ञान से लाभान्वित किया है। वस्तुतः उन्होंने न केवल शिक्षा बल्कि दर्शन, धर्म, आध्यात्मिकता, अन्धविश्वास आदि को दुनिया के सामने स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। उन्होंने सम्पूर्ण संसार को सत्य की ओर ले जाने का प्रयास किया है। वह हर वस्तु को तार्किक रूप से स्वीकार करने की सलाह देते है। उन्होंने उस हर विचार का विरोध किया है जिसका कोई तर्क या आधार न हो।

सत्य को मानो किन्तु पहले तर्क देखो। यदि सूर्य पूर्व से निकलता है तो क्यों? आप कहते है कि सूर्य पूर्व से ही निकलता है केवल इसलिए कि हमें ऐसा पढ़ाया गया है या हमारे पूर्वजों ने कहा है। नहीं : इसका तार्किक आधार होना चाहिए।

इस दृष्टि से विचार करने पर ओशो एक श्रेष्ठ दार्शनिक के रूप उभर कर आये है उनके दार्शनिक सिद्धान्तों मान्यताओं और आदर्श का प्रभाव केवल देश में ही नहीं बल्कि सार्वभौमिक बन गया है। आधुनिक भारत में यदि उनके दर्शन को प्रयोग में लाया जाये तो एक नये समाज का निर्माण सम्भव है।

भावी शोध की सम्भावनायें–

- ओशो जी द्वारा विधिवत साहित्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन।
- ओशो जी के मानवतावादी शिक्षा दर्शन का अध्ययन।
- महात्मा गांधी, रविन्द्रनाथ टैगोर, विवेकानन्द व ओशो (आचार्य रजनीश जी) के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन।
- ओशो जी के जीवन दर्शन का विस्तृत अध्ययन।
- स्वामी श्रद्धानन्द व ओशो के शैक्षिक दर्शन का समीक्षात्मक अध्ययन।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अमृत प्रीतम, विश्व के विपुलतम साहित्य सर्जक (ओशो)।
2. ओशो कम्युन इण्टरनेशनल, ओशो एक जीवन परिचय।
3. ओशो कम्युन इण्टरनेशनल, ध्यान और प्रेम।
4. ओशो कम्युन इण्टरनेशनल, ध्यान की कला।
5. ओशो कम्युन इण्टरनेशनल, एक मात्र उपायः जागों।
6. ओशो कम्युन इण्टरनेशनल, प्रेम है द्वारा सत्य का।
7. ओशो कम्युन इण्टरनेशनल, भारत एक अनुठी सम्प्रदा।

8. रमन बिहारी लाल, शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज शास्त्रीय सिद्धांत।